एम.ए. हिंदी कार्यक्रम
द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2025 और जनवरी 2026 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम :

मॉड्यूल '4' : मध्यकालीन कविता

एम.एच.डी – 21 : मीरा का विशेष अध्ययन
एम.एच.डी – 22 : कबीर का विशेष अध्ययन
एम.एच.डी – 23 : मध्यकालीन कविता–1
एम.एच.डी – 24 : मध्यकालीन कविता–2

सत्रीय कार्य

जुलाई–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2026
जनवरी–2026 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2026

एम.एच.डी.–23 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–23
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–23/टी.एम.ए./2025–26
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** 10x4 = 40

(क) कदरि कम्भ दोइ चीर पहिराये। चाँद चलन अपुरुब घर लाये।।
औ समतोल दीख असि धारा। देख विमोह सरँग पँतारा।।
देखि कम्भ मोर मन तस लागा। सरभैं धरउँ खाल कैं नाँगा।।
चौदह चाँन देखि पाँ लागहि। पाप केत बरसहिं कर।।
रूप पुतरि गढ़ दस नख लावा। तरुवहि रकत भू तर चलि।।

(ख) ऐसा ध्यान धरौ बनवारी, मन पवन दृढ़ सुषमन नारी।।
से जप जपूँ जो बहुरि न जपना, सो तप तपूँ जो बहुरि न तपना।।
से गुरु करूँ जो बहुरि न करना, ऐसो मरूँ जो बहुरि न मरना।।
उल्टी गंग जमुन में लाऊँ, बिन ही जल मज्जन दै पाऊँ।।
लोचन भरि–भरि बिम्ब निहारूँ, जेति विचारि न और विचारूँ।।

(ग) बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी तहीं कहूँ ब्रज खोरी।।
काहे कौं हम ब्रज–तन आवतिं, खेलति रहतिं आपनी पौरी।।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद–ढोटा, करत फिरत माखन–दधि चोरी।।
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।।
सूरदास प्रभु रसिक–सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी।।

(घ) धूर भरे अति शोभित स्याम जू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजन बाजती, पीरी कछोटी।।
व छवि को रसखानि बिलोकत बारत काम–कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी ।।

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए :** 15x3 = 45

(क) मध्ययुगीनता की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
(ख) संत रविदास का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(ग) रसखान की प्रेमभावना का विवेचन कीजिए।

3. **निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए :** 5x3 = 15

(क) सूरदास की काव्य–भाषा
(ख) 'चंदायन' की कथा
(ग) सहज–शून्य